मृच्छकटिकम्

'मृच्छकटिकम्' के प्रथम अङ्क का कथानक

प्रस्तावना - 'मृच्छकटिक' एक प्रकरण है। इसका प्रारम्भ नान्दी-पाठ के बाद प्रस्तावना से होता है। चिरकाल तक संगीत का अभ्यास करने से क्षुधार्त्त सूत्रधार अपने घर पहुँच कर वहाँ होने वाली अभूतपूर्व तैयारी देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है। इसका रहस्य जानने के लिए वह अपनी पत्नी से पूछता है। वह उसे 'अभिसम्पपीत' नामक व्रत के अनुष्ठान की तैयारी बताती है। इसे सुनकर वह क्रुद्ध हो जाता है। परन्तु वस्तुस्थिति जानकर वह भी अनुष्ठान में सहयोग देने के लिए ब्राह्मण निमन्त्रित करने के विचार से चल पड़ता है। वह उज्जयिनी-वासियों की सम्पन्नता और अपनी निर्धनता से चिन्तित है कि उसके यहाँ भोजन करने के लिए किसी भी ब्राह्मण का तैयार होना कठिन है। इस समय अकस्मात् उसे आता हुआ मैत्रेय दिखाई देता है; किन्तु उसके घर भोजन के लिए मैत्रेय किसी भी प्रकार तैयार नहीं होता है। दुःखी होकर सूत्रधार दूसरे ब्राह्मण की खोज में निकल जाता है और इस प्रकार रंगमञ्च पर मैत्रेय के आने की सूचना के साथ प्रस्तावना समाप्त होजाती है।

प्रथम अङ्क का कथानक: प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में मैत्रेय (विदूषक) रंगमञ्च पर आता है। वह चारुदत्त की

Scanned with CamScanner

बीती हुई सम्पन्नता और वर्तमान अतिनिर्धनता को याद करके दुःखी हो जाता है। वह प्रिय मित्र जूर्णवृद्ध द्वारा दिया गया जातीकुसुम से सुगन्धित दुपट्टा देने के लिए चारुदत्त के पास जाता है। चारुदत्त अपने घर की दशा देखकर दुःखी होकर बैठा है। विदूषक(मैत्रेय) को आया देखकर चारुदत्त उसका स्वागत करता है। विदूषक वह दुपट्टा उसे दे देता है। चारुदत्त अपनी निर्धनता के कारण लोगों के परिवर्तित व्यवहार को देख कर बहुत दुःख प्रकट करता है। वह विदूषक को मातृदेवियों के लिए बलि समर्पित करने के लिए कहता है। किन्तु वह जाने से कतराता है। तब चारुदत्त उसे वहाँ ठहरने के लिए कहकर समाधि सम्पन्न करने लगता है।

दूसरे दृश्य में वसन्तसेना का ~~पीछा~~ पीछा करते हुए विट, चेट और शकार का प्रवेश होता है। वसन्तसेना भागती है। वे तीनों उसका पीछा करते हैं। तेज चलने से वह आगे निकल जाती है। उसके परिजन पीछे छूट जाते हैं। शकार (राजा का शाला) उससे अपना प्रेम प्रकट करता है और वसन्तसेना से प्रेम के लिए आग्रह करता है। विट भी वसन्तसेना को समझाता है; किन्तु वह किसी भी तरह उसे नहीं चाहती है। मूर्खता से शकार यह कह देता है कि चारुदत्त का घर समीप में ही है। यह सुनकर वसन्त सेना खुश होकर अन्धकार में गायब हो जाती है। वह चारुदत्त के घर के पास पहुँचती है। वहाँ दरवाजा बन्द है।

तृतीय दृश्य में चारुदत्त और विदूषक सामने आते हैं।

Scanned with CamScanner

चारुदत्त जप समाप्त करके पुनः विदूषक को बलि देने के लिए कहता है। उसका इनकार सुनकर चारुदत्त बहुत दुःखी हो जाता है। तब विदूषक रदनिका के साथ जाने के लिए राजी हो जाता है। विदूषक दरवाजा खोलता है। बाहर खड़ी वसन्तसेना अपने आंचल से दीप बुझा देती है। विदूषक रदनिका से बाहर चलने को कहता है और स्वयं दीप जलाने के लिए अन्दर चला जाता है। अवसर का लाभ उठाकर वसन्तसेना भीतर चली जाती है। इधर उसके खोजते हुए शकार आदि भी वहीं पहुँच जाते हैं। शकार अँधेरे में ~~खड़ी~~ खड़ी रदनिका को ही वसन्तसेना समझकर उसके बाल पकड़ लेता है। वह प्रतिवाद करती है। इसी बीच दीप लेकर विदूषक आ जाता है। रदनिका के अपमान से वह बहुत नाराज होता है किन्तु विट द्वारा सारी स्थिति बताने और प्रार्थना करने पर शान्त हो जाता है। विट वहाँ से चलने के लिए कहता है। किन्तु शकार वसन्तसेना को लिए बिना नहीं जाना चाहता है। कुछ देर बाद वह चारुदत्त को धमकी देकर वापस चला जाता है। विदूषक रदनिका समझा बुझा कर भीतर ले जाता है।

प्रथम अंक के चतुर्थ दृश्य में चारुदत्त वसन्तसेना को रदनिका समझ लेता है और अपने पुत्र रोहसेन को भीतर ले जाने के लिए उससे कहता है। वह पुत्र को ठण्ड से बचाने के लिए दुपट्टा ओढ़ने के लिए देता है। उसकी पुष्पगन्ध सूंघकर वसन्त सेना प्रसन्न हो जाती है। वह अभी भी उसके यौवन के प्रभाव को समझती है। वह चुपचाप खड़ी रहती है। अपने

Scanned with CamScanner

आदेश का पालन न होते देख कर चारुदत्त पुनः अपनी निर्धनता के लिए दुःखी होने लगता है। इतने में विदूषक और रदनिका वहाँ आ जाते हैं। तब वसन्तसेना की सारी घटना चारुदत्त को मालूम हो जाती है। वे दोनों परस्पर क्षमा-याचना करने लगते हैं। वसन्तसेना अपने सारे गहने उसके (चारुदत्त के) पास धरोहर के रूप में रख देती है। चारुदत्त और विदूषक दोनों वसन्तसेना को उसके घर छोड़कर वापस लौटते हैं। चारुदत्त उस सुवर्णभाण्ड की रक्षा का भार दिन में वर्धमानक पर और रात में विदूषक पर डाल [redacted] देता है।

Scanned with CamScanner